International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी पत्रकारिता

रूपेश शर्मा

शोधार्थी
पत्रकारिता एवं जनसंचार
विभाग
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर
9319051030

देश की आजादी के बाद पत्रकारिता को प्रायः दो हिस्सों में बांटकर देखा जाता है। सन् 1947 में देश की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र जीवन में बुनियादी अंतर आया। ''आजादी प्राप्त करने के पश्चात आवश्यकताएं ही नहीं बदलीं, लोक कर्तव्यों और अधिकारों की दिशा भी बदली। देश के सामने राष्ट्र निर्माण का महान कार्य उपस्थित हुआ जिसे सफल बनाने के लिए जनमत जगाने का सबसे अधिक भार पत्रकारों पर आन पड़ा। राष्ट्र जीवन के सभी अंगों के विकास में समुचित सहायता प्रदान करना पत्रकारों का दायित्व बन गया।''

पत्रकारिता का दूसरा हिस्सा ताजा दौर का है, जिसमें मीडिया का सबसे बड़ा संकट यह है कि वह खुद ही अपना शत्रु और आलोचक बन बैठा है। उसके अपनी लोग ही उसकी पारम्परिक आस्थाओं के प्रति आघात करते हुए उसके आलोचकों को यह मौका दे रहे हैं कि वे मीडिया पर सवाल खड़े करें। ''मीडिया का कोई भी स्वरूप हो आज वह गहरे द्वंद्व का शिकार है। प्रिंट, इलैक्ट्रॉनिक या अन्य जनमाध्यमों की आलोचना का सबसे बड़ा कारण शायद यह है कि इन सारे केंद्रों से सम्पादक की सत्ता का पतन हुआ, उसका बौधिक पराभव हुआ। बढ़ते बाजारवाद ने विचार की जगह ब्रांड को स्थापित करने की होड़ बढ़ा दी।''2

आजादी मिलने के वर्षों में 'छायावादोत्तर या प्रगतिवाद में भी पत्रकारिता का विकास अविच्छिन्न रूप से होता रहा। स्वतंत्रता के पूर्व और उसके उत्तर काल में इसका विकास हुआ। इस समय दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक और अर्धवार्षिक आदि पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। दैनिक पत्रों में हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, स्वतंत्र भारत, जागरण, जनवार्ता, विश्वामित्र और सन्मार्ग आदि महत्वपूर्ण समाचार पत्र हैं। इस समय साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग और दिनमान आदि कईं ऐसे पत्र निकले जिनमें सामाजिक, राजनीतिक सामग्री के साथ साहित्यिक रचनाओं को प्रमुखता से छापा गया। इन सभी पत्रों के प्रारम्भिक दौर के सम्पादक साहित्यकार या साहित्य से जुड़े हुए लोग ही थे।''3

आजादी के आंदोलन में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी भी हथियार बनी थी। लिहाजा 1947 के तत्काल बाद भी ''इस समय की पत्रकारिता हिन्दी से जुड़ी इस संवदेनशील समस्या के प्रति बहुत गम्भीर दिखाई देती है और हर तरह से व्यवस्था पर दबाव बनाती है कि वह राजनीतिक फायदे को किनारे रखकर हिन्दी के प्रति न्याय करें। धर्मयुग हिन्दी को लेकर दिनमान की अपेक्षा कड़ा रूख अख्तियार करता है और सरकार की

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

नीतियों को खुली चुनौती देता है। इस समय पत्र–पत्रिकाओं ने वैचारिक विविधता को प्रश्न दिया। इससे हिन्दी जीवन व्यवहार की भाषा के रूप में तेजी से विकसित हुई''।[4]

माध्यम इलाहाबाद से निकलती थी, जो कुछ समय तक बंद भी रही किन्तु पुनः प्रकाशित हुई। विनम्रता के साथ कहा गया कि ''माध्यम का उद्देश्य हिन्दी जगत का नेतृत्व करना नहीं है जैसा उसके नाम से और 'निमित्त मात्र भव' के उसके मूल मंत्र से स्पष्ट है। उसका ध्येय केवल यही है कि उसक माध्यम से हिन्दी का स्वर प्रत्येक दिशा में फैले और देश के कोने–कोने तक पहुंचे। उसके निमित्त से हिन्दी के विराट और उदात्त वाड्मय के प्रति अधिकाधिक व्यक्ति आकृष्ट हों। उसकी सहायता से हिन्दी जगत में हिन्दीतर भारतीय साहित्यों की जानकारी उत्तरोत्तर बढती रहे''।[5]

इसी दौर में वह समय भी आया जब हिन्दी के लिए चिंता जताई गई। कहा गया कि 'इन दिनों प्रायः सभी पत्र–पत्रिकाओं में हिन्दी की वर्तमान स्थिति को लेकर असंतोष है और प्रायः सभी इसे लेकर बहस में उतरते हैं। इस बहस को राष्ट्रीय प्रश्न के रूप में लेते हुए पत्रकारिता ने सब तरफ से सरकार को घेरने की चेष्टा की, पर सरकार राजनीतिक फायदों को देखते हुए हिन्दी की यथावत् स्थिति को बहाल रखने में सफल रही। हिन्दी को लेकर तरह–तरह के प्रवाद सामने आये, कई भाषाओं के आयोग बने, जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बताया था''।[6]

वास्तकवकता यह है कि पत्र–पत्रिकाओं ने सामाजिक बदलाव, स्वाधीनता, सांस्कृतिक पुनर्जारण जैसे महान और व्यापक उद्देश्य को निभाया है। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् पत्रिकाओं के औद्योगीकरण के साथ–साथ पूंजीवाद और व्यापारिक स्वार्थनिष्ठा की आंधी में राष्ट्रीयता की भावना और आदर्शनिष्ठा में कमी का आंकलन करने की आवश्यकता दिखाई पड़ती है।

हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्यः

वर्तमान में पत्रकारिता का अर्थ महज समाचार पत्र ही नहीं है। अब इसमें रेडियो, दूरदर्शन, केबल उपग्रहीय आदि कई माध्यम शामिल हो गए हैं और जर्नलिज्म मास मीडिया में बदल चुका है। हम देखते हैं कि मास मीडिया के इस दौर में हिन्दी पत्रकारिता को सबसे अधिक लाभ मिला है।

''1980 में इंदिरा गांधी सत्ता में दुबारा लौटी थीं। सत्ता में वापसी के साथ इंदिरा गांधी ने मीडिया के क्षेत्र में जो सबसे महत्वपूर्ण काम किया था, वह था, जन–माध्यम के रूप में टेलीविजन का विस्तार। वैसे तो टेलीविजन भारत में छठे दशक में आ चुका था। लेकिन अस्सी के बाद ही इसे भारत के हर हिस्से में पहुंचने का अवसर मिला था। इन सालों में यह माध्यम अन्य सभी माध्यमों की तुलना में सबसे ज्यादा शक्तिशाली, व्यापक और प्रभावशाली नजर आता है?7

टेलीविजन विस्तार का भी सर्वाधिक लाभ हिन्दी पत्रकारिता को ही मिला। चैनलों में 80 प्रतिशत से अधिक हिन्दी के ही हैं। दर्शकों की संख्या के लिहाज से भी हिन्दी चैनल सबसे आगे हैं। आज सभी प्रमुख चैनलों (आईबीएन, स्टार, आजतक आदि) और अखबारों ने अपनी बेवसाइट भी बनाई हुई हैं। इनके लिए अलग से पत्रकार नियुक्त हैं।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

वर्तमान दौर संचार क्रान्ति का है। संचार क्रान्ति की इस प्रक्रिया में जनसंचार माध्यमों के भी आयाम बदले हैं। इाज की वैश्विक अवधारणा के अंतर्गत सूचना एक हथियार के रूप में परिवर्तित हो गई है। सूचना जगत गतिमान हो गया है, जिसका व्यापक प्रभाव जनसंचार माध्यमों पर पड़ा है। पारम्परिक संचार माध्यमों समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविजन से आगे हम वेब मीडिया तक पहुंच गये हैं। वेब पत्रकारिता आज समाचार पत्र–पत्रिका का एक बेहतर विकल्प बन चुका है। न्यू मीडिया, सोशल मीडिया ऑनलाइन मीडिया, साइबर जर्नलिज्म और वेब जर्नलिज्म जैसे कई नामों से वेब पत्रकारिता को जाना जाता है। वेब पत्रकारिता प्रिंट और ब्राडकास्टिंग मीडिया का मिला–जुला रूप है यह टेक्स्ट, पिक्चर्स, ऑडियो और वीडियो के जरिये स्क्रीन पर हमारे सामने होता है। माउस के सिर्फ एक क्लिक से किसी भी खबर या सूचना को पढ़ा जा सकता है। यह सुविधा 24 घंटे और सातों दिन उपलब्ध होती है जिसके लिए किसी प्रकार का मूल्य नहीं चुकाना पड़ता।

वेब पत्रकारिता का एक स्पष्ट उदाहरण है विकिपीडिया। विकिपीडिया ने खोजी पत्रकारिता के क्षेत्र में वेब पत्रकारिता का जमकर उपयोग किया है। पहले अंग्रेजी प्रधान इस माध्यम ने हिन्दी जगत के महत्व को समझा और आज इस मंच पर भी हिन्दी पत्रकारिता की प्रधानता है। खोजी पत्रकारिता अब तक राष्ट्रीय स्तर पर होती थी लेकिन विकीलीक्स ने इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग किया और अपनी रिपोर्टों से खुलासे कर पूरी दुनिया में तहलका मचा दी। भारत में वेब पत्रकारिता को लगभग एक दशक बीत चुका है। समाचार चैनलों पर किसी सूचना या खबर के निकल जाने पर उसके दोबारा आने की कोई गारंटी नहीं होती, लेकिन वहीं वेब पत्रिका खोलकर पढ़ा जा सकता है।

लगभग सभी बड़े–छोटे समाचार पत्रों ने अपने 'ई–पेपर', 'ई–पेपर' यानी इंटरनेट संस्करण निकाले हुए हैं। भारत में 1995 में सबसे पहले चेन्नई से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दू' ने अपना ई–संस्करण निकाला था। 1998 तक आते–आते लगभग 48 समाचार पत्रों ने भी अपने ई–संस्करण निकाले। आज यह संख्या हजार से ऊपर पहुंच चुकी है। इनमें भी भी हिन्दी सबसे आगे है। वेब पत्रकारिता ने पाठकों से सामने ढेरों विकल्प रख दिए हैं। वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों में जागरण, हिन्दुस्तान, भास्कर, अमर उजाला जैसे सभी पत्रों के ई–संस्करण मौजूद है। भारत में समाचार सेवा देने के लिए गूगल न्यूज, एमएसएन, बीबीसी हिन्दी, जागरण, मीडिया मंच, प्रवक्ता और प्रभा साक्षी प्रमुख वेबसाइट हैं जो अपनी समाचार सेवा दे रही हैं। कम्प्यूटर या लैपटाप के अलावा एक और ऐसा साधन मोबाइल फाले जुड़ा है जो समाचार सेवा को विस्तार देने के उभर रहा है। फोन पर ब्राडबैंक सेवा ने आमजन को वेब पत्रकारिता से जोड़ा है। कुछ साल पूर्व मुंबई में हुए सीरियल ब्लास्ट की ताजा तस्वीरें और वीडियो सर्व प्रथम सोशल मीडिया में और आमजनों में साझा हुआ था। अद्भुत यह है कि मोबाइल कम्पनियां भी अब हिन्दी सेवा प्रमुखता से अपना रही है।

बहुविध प्रगति के बावजूद एक क्षेत्र में अवनति भी देखी जा रही है। करीब 90 साल पहले बाबूराव विष्णु पराड़कर ने भविष्य की पत्रकारिता के संकेत दिए थे। उनके मुताबिक ''पत्र सर्वांग सुन्दर होगें, आकार बड़े होंगे, छपाई अच्छी होगी, गम्भीर गवेषणा की झलक होगी और मनोहारिणी शक्ति की होगी, ग्राहकों की संख्या लाखों में गिनी जाएगी, यह सब होगा पर प्राणहीन होंगे। पत्रों की नीति देशभक्त, धर्मभक्त अथवा मानवता के उपासक महा प्राण सम्पादकों की नीति न होगी। इन सब गुणों से सम्पन्न लेखक वित्त मस्तिष्क समझे जाएंगे, सम्पादक की कुर्सी तक उनकी पहुंच भी नहीं होगी। वेतन भोगी सम्पादक मालिक का काम करेंगे व हम लोगों से अच्छे होंगे। पर आज जो हमें स्वतंत्रता प्राप्त है, वह उन्हें न होगी।'8

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

मीडिया के स्वामित्व से ही मीडिया पर वर्चस्व का सवाल भी जुड़ा हुआ है। मीडिया के संसाधनों पर जिनका स्वामित्व होगा, वर्चस्व का सवाल भी जुड़ा हुआ है। मीडिया के संसाधनों पर जिनका स्वामित्व होगा, वर्चस्व भी उन्हीं का होगा, इसे समझना नहीं है। लेकिन यह सवाल इतना सरल भी नहीं है। मीडिया में यह वर्चस्व न तो बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है और न ही यह वर्चस्व चुनौतीहीन होता है। ''लोकतांत्रिक देश में मीडिया अपनी एक लोकतांत्रिक छवि बनाने और बनाए रखने की कोशिश करता है। यदि वह अपने मालिकों के हितों का वाहक बनकर रह जाता है तो उसकी साख नहीं रह सकती। साख का न बना रहना मीडिया व्यवसाय के लिए घातक साबित हो सकता है। इसलिए मीडिया अपने को किसी भी तरह के वैचारिक नियंत्रण से मुक्त होने का दावेदार बनकर उपस्थित होता है।9

निष्कर्ष–

समूचे विश्व में पत्रकारिता आज भी संघष्र और जज्बे का पेशा है। मिशन से प्रोफेशन और फिर 'बिजनेस' की बातें बहुत होती रही हैं, पर वास्तविकता से परे पत्रकारिता का कोई भी विमर्श कुछ भी अर्थ नहीं रखता। इस दृष्टि से देखें तो तमाम विंगतियों के बावजूद पत्रकारिता अपने मूल उद्देश्य से हटी नही है। सच है कि पत्रकारिता पर व्यावसायिकता के आरोप लग रहें हैं, दूसरी ओर समाचार पत्र और मीडिया के दूसरे रूप तरह–तरह की खबरें सामने ला रहे हैं। परिणाम यह है कि घपले–घोटाले करने वाले कानून के शिकंजे में पहुंचाये जा रहे हैं तो दूसरी ओर बेहतर कार्य के लिए सम्मान भी किया जा रहा है।

अपने उद्देश्य के साथ निरन्तर आगे बढ़ रही हिन्दी पत्रकारिता ने नित नई तकनीक अपनाने में भी कंजूसी नहीं की है। वह आज अंग्रेजी माध्यमों से किसी भी मामले में पीछे नहीं है। ''मेरी दृष्टि में वह दिन दूर नहीं है जब पत्रकारिता (Journalism) के स्थान पर पत्रकारिता विज्ञान (Journalism) शब्द का प्रयोग होगा''10

यह वक्त गुजर गया जब हिन्दी पत्रकारिता को कुछ पढ़े लिखे अंग्रेजीदां लोग हेय दृष्टि से देखते थे। किसी खबर अथवा घटना को लेकर अंग्रेजी की मानसिकता रखने वाले लोग हिन्दी पत्रकारिता को दोयम दर्जे का समझते थे। अब हिन्दी पत्रकारिता अपने उत्कर्ष पर है। देश भर में हिन्दी समाचार पत्र और पत्रिकाओं के पाठक वर्ग की संख्या में न सिर्फ ऐतिहासिक बढ़ोतरी दर्ज की गई है अपितु लोकप्रियता के लिहाज से भी अंग्रेजी पत्र अैर पत्रिकाएं काफी पीछे हैं। आज हिन्दी पत्रकारिता उस मुकाम पर जहाँ शासन सत्ता की गलतियाँ उजागर करने से लेकर सामाजिक जागरूकता अभियान चलाने तक में उसकी सक्रिय भागीदारी है। अपने पुराने दौर से बाहर निकलकर हिन्दी पत्रकारिता नित नये आयाम पेश कर रही है। सही मायनों में देखा जाये तो हिन्दी पत्रकारिता के प्रति पाठकों की सोच में भी अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसके साथ ही पत्रकारिता अब पहले से अधिक चुनौतिपूर्ण हो गई है। ऐसे कई घोटाले हैं जो राष्ट्रहित में देश के सामने लाने का श्रेय हिन्दी पत्रकारों को है, उन पर हिन्दी जगत गर्व की अनुभूति करता है। इन सबके बावजूद इसका स्याह पक्ष भी है कि अधिक सनसनी पैदा करने के चक्कर में कई बार विश्वसनीयता का संकट उत्पन्न हो जाता है। इससे बचने की जरूरत है।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

संदर्भ–सूची

1. डॉ. महासिंह पूनियाः पत्रकारिता का बदलता स्वरूप
2. संजय द्विवेदीः पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य
3. डॉ. अर्जुन प्रताप सिंहः हिन्दी पत्रकारिता–स्वरूप एवं प्रकार
4. ज्योतिष जोशीः साहित्यिक पत्रकारिता
5. बलकृष्ण रावः माध्यम की सम्पादकीय, अंक–एक, वर्ष–एक, मई, 1964
6. ज्योतिष जोशीः साहित्यिक पत्रकारिता
7. ज्बरीमल पारवः वर्तमान साहित्य, अप्रैल, 2007
8. 1925 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भातपुर अधिवेशन में अध्यक्ष पद से भाषण
9. ज्बरीमल पारख
10. डॉ. अर्जुन तिवारीः हिनदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास